Govt.Naveen College Bori

Details of book/chapters published by the faculties

Title of the book/chapters published	Title of the paper	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Name of the publisher	Web link
Mahila Sashaktikaran: Chunotiyan ewam sambhawanaye	Gramin Mahila Sashaktikaran me Mahilaon ki Bhumika	2017	97881815240032000	Book enclave Jaipur	https://www.justdial.com › Jaipur › Raj-Publishing-Hou..
Manav adhikar ewam janjatiy sanskriti ke badalte aayam	Manav adhikar ke vividh aayam	2020	97893877993252000	Aadi Publisher Jaipur	https://www.justdial.com/Jaipur/Aadi-Publications-Near-PNB-Atm-Chaura-Rasta/0141PX141-X141-111019101944-X9X2_BZDET
Indian Agriculture Reforms and Rural Development	Nano fertilizers boon for Sustainable Agriculture Development: a Review	2021	978-93-90734-26-9	World Lab Publication	www.worldlabpublication.com

महिला सशक्तीकरण
नव विमर्श

किरण परनामी

राज पब्लिशिंग हाउस

44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004

Cell : 09414051782

Email : shreerajpublishing@gmail.com

महिला सशक्तीकरण : नव विमर्श

सम्पादक :

डॉ. शशि वर्मा

डॉ. मीनाक्षी खंगारोत

© अध्याय की विषयवस्तु के लेखकाधीन

International Standard Book No. (ISBN) Book
978-81-953834-6-7

संस्करण : 2021

पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत

पुस्तक प्रकाशन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना मानवीय भूल के कारण संभव हो सकता है। पुस्तक में प्रकाशित लेख के विचारों हेतु सम्पादक एवं प्रकाशक की कोई जिम्मेदारी नहीं है।

मुद्रक

ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज, दिल्ली

विषयानुक्रमणिका

	आमुख	(ii)
1.	महिला सशक्तीकरण : अवधारणा एवं आयाम **डॉ. शशि वर्मा**	1
2.	लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण **डॉ. मीनाक्षी खंगारोत**	22
3.	स्त्री सशक्तीकरण और मुंशी प्रेमचंद का 'गबन' उपन्यास **डॉ. विवेक शंकर**	42
4.	महिला शिक्षा एवं सशक्तीकरण **डॉ. किशन यादव, माधुरी साहू**	48
5.	मानवाधिकार और जनजातीय महिलाएं (महिला सशक्तीकरण के विशेष सन्दर्भ में) **डॉ. प्रियंका चौबीसा**	61
6.	महिला शिक्षा और सशक्तीकरण **डॉ. ज्योति गौतम**	73
7.	महिला सशक्तीकरण में महिला बाल विकास की भूमिका : एक मूल्यांकन **डॉ. आशुतोष व्यास, राधे श्याम गमेती**	86
8.	ग्रामीण महिला सशक्तीकरण में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका **डॉ. सुचित्रा शर्मा, डॉ. अमरनाथ शर्मा**	103
9.	महिला सशक्तीकरण : महिला विकास सरकारी योजनाएं **डॉ. अंजू लता जोशी**	117

ग्रामीण महिला सशक्तीकरण में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

डॉ. सुचित्रा शर्मा*
डॉ. अमरनाथ शर्मा**

शोध सारांश :

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत के गांव का हर ग्रामीण चाहे वह पुरुष हो या महिला विकास की दिशा में सतत प्रयासशील है। उनकी कार्यशीलता शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन से सोने में सुहागा का काम करती है। भले ही हमारा ग्रामीण समाज सुविधाओं के मामले में संपन्न नहीं है पर विकास में उनकी भागीदारी को अनदेखा भी नहीं किया जा सकता। इस ग्रामीण समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा में जोड़ना और उस तक विकास की पहुंच बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। यह कार्य अकेले सरकार द्वारा संभव नहीं है। लोगों का स्वैच्छिक सहयोग अर्थात गैर सरकारी संगठनों की भागीदारी महत्वपूर्ण आवश्यकता बनी हुई है। यह संगठन अपने संसाधनों व कार्यप्रणाली के साथ उन सुदूर क्षेत्रों में भी जाकर काम करते हैं। महिलाओं का सशक्तीकरण आज विकास योजनाओं व नीतियों का महत्वपूर्ण मुद्दा है। गैर सरकारी संगठन इस दिशा में अपनी पूरी क्षमता से महिलाओं में सशक्तीकरण की प्रक्रिया को सुगम बना रहे हैं। ग्रामीण परिवेश असमानतावादी सोच से आवेष्ठित है। यहां की महिलाएं भी अनेक समस्याओं से जूझ रही है शासन की योजनाएं और नीतियां इन के विकास हेतु सतत प्रयासरत हैं, परंतु आशातीत परिवर्तनों से दूर। ऐसे समय शासन के साथ गैर शासकीय प्रयास इन लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है।

कुंजी शब्द– महिला सशक्तीकरण, गैर सरकारी संगठन, महिला कमांडो, जागरूकता, लैंगिक भेदभाव।

---

* शासकीय वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग
** शासकीय नवीन महाविद्यालय, बोरी, दुर्ग

महिलाएं आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करती है इसलिए इस स्तर पर समाज में महिला पुरुष दोनों लिंगों को समान अधिकार देना चाहिए। सशक्तीकरण का सबसे अच्छा तरीका शायद महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में शामिल करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अकेले सरकारी पहल पर्याप्त नहीं होगी।

वास्तविक और प्रभावी तभी जब उनके पास आय और संपत्ति हो ताकि वे अपने दम पर खड़े हो सकें और समाज में अपनी पहचान बना सके। समाज को एक ऐसा माहौल बनाने के लिए पहल करनी चाहिए जिसमें उन्हें सरकार द्वारा महिला विकास के लिए बनाई गई योजनाओं का उचित लाभ मिल सके। कोई लिंग भेदभाव नहीं होना चाहिए और महिलाओं को स्वयं निर्णय लेने का पूरा अवसर मिले और समानता की भावना के साथ देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में भाग ले सके।

सरकार द्वारा महिला विकास के लिए बनाई गई सभी योजनाओं के माध्यम से इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि सरकार महिलाओं के समग्र विकास के लिए हर तरह के प्रयास काफी लम्बे समय से करती आ रही है और यही कारण है कि आज समाज में महिलाओं की भूमिकाओं में बहुत तरह के बदलाव भी दिखायी देने लगे हैं। आज शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जहाँ पर महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज ना करायी हो। यह उम्मीद भी की जाती है कि आगे आने वाले समय में बेटी बचाओ–बेटी पढाओ, प्रधानमन्त्री उज्ज्वला योजना, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना और किशोरियों के सशक्तीकरण के लिए राजीव गांधी योज़ना (सबला) के सकारात्मक परिणाम सभी के सामने आयेंगे जब समाज से भ्रष्टाचार और सामाजिक सहयोग में वृद्धि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची : –

1. सुरेंद्र कटारिया (2011) भारतीय लोक प्रशासन
2. प्रीता जोशी, विकास प्रशासन
3. सुरेंद्र कटारिया, सामाजिक प्रशासन

4. "संग्रहीत प्रति" (PDF)- मूल (PDF) से 10 जनवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 29 मई 2012
5. https://m-economictimes.com
6. https://www.india.com
7. https://www.aajtak.in
8. https://hindi.goodreturns.in
9. https://www.patrika.com
10. https://www.india.gov.in
11. https://www.jagranjosh.com

***

मानवाधिकार के विविध आयाम

Diverse Dimension of Human Rights

आशुतोष व्यास

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	V
1.	राष्ट्रवाद एवं मानवाधिकार : भारत के संदर्भ में एक अध्ययन –पयोद जोशी	1
2.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानव अधिकार : एक अवलोकन –श्रद्धा तिवारी	12
3.	भारत में मानवधिकार और बाधाएँ –ईश्वरचन्द्र शर्मा	19
4.	भारत में मानवाधिकार : एक सामाजिक मूल्यांकन –परेश द्विवेदी	25
5.	मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी आयाम –सुबोध कान्त नायक	31
6.	गैर-सरकारी संगठन एवं मानव अधिकार –अंजना यादव	39
7.	जेण्डर, शिक्षा और मानवाधिकार : संवेदनशील समाज के संदर्भ में –मितेश जुनेजा	54
8.	मानवाधिकार संरक्षण में शिक्षा की भूमिका : एक विमर्श –आशीष कुमार	61

9. भारतीय पुलिस व्यवस्था और मानवाधिकार 76
–आशुतोष व्यास
10. कल्याणकारी राज्य में मानवाधिकार एवं पुलिस संगठन : एक अवलोकन 89
–विभा शर्मा
11. मानवाधिकार एवं महिलाएँ : विधिक चेतना के संदर्भ में अध्ययन 98
–अनिल कुमार पारीक
12. महिलाएँ एवं मानवाधिकार 108
–रामफूल जाट
13. महिलाएँ और मानवाधिकार 122
–मीना जैन, निकिता नागोरी
14. भारत में मानव अधिकार एवं महिला प्रस्थिति : सामाजिक एवं राजनीति परिप्रेक्ष्य 132
–महेश नावरिया
15. राजस्थान में महिलाओं की समस्याएँ एवं मानवाधिकार 143
–प्रियंका चौबीसा
16. लैंगिक असमानता और मानवाधिकार (कन्या भ्रूण हत्या के संदर्भ में) 152
–मीनाक्षी खंगारोत
17. मानवाधिकार एवं दलित 164
–दीपक पंचोली
18. मानवाधिकार एवं जनजातीय संस्कृति के बदलते आयाम 173
–सुचित्रा शर्मा, अमरनाथ शमा
19. भारत में बालकों की समस्याएँ एवं मानवाधिकार 187
–चेतन लाल रेगर
लेखक वृंद 196

18

मानवाधिकार एवं जनजातीय संस्कृति के बदलते आयाम

सुचित्रा शर्मा, अमरनाथ शर्मा

जनजातीय समाज अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण हमेशा से सभ्य और सुसंस्कृत समाज को, चाहे वह पत्रकार हो, सैलानी हो, लेखक या शिक्षाविद् हो, आकर्षित करता रहा है। फिर सबकी यही मिली-जुली कोशिश रहती है, कि उनकी विलक्षणताओं के अन्वेषण को जाने-पहचानें और सबके सामने लायें। समाजशास्त्री उनके जीवन की मौलिकताओं को अपने नजरिये और कभी मनोरंजन की दृष्टि के दायरे में रखकर देखते हैं। उनके रीति-रिवाजों और परम्पराओं में निहित गुदगुदाने वाले और सनसनीखेज ब्यौरे दुनियाँ के सामने लाने के प्रयासों में अपने नागरिक कर्त्तव्य की सीमा तय कर लेते हैं। उनके जीवन के अछूते पहलुओं—अलौकिक विश्वास, जादू-टोने और विलक्षण अनुष्ठानों का आँखों देखा हाल बयान प्रस्तुत कर प्रशंसित होना चाहते हैं, पर उनकी इस प्रत्यक्ष जिंदगी के पीछे का जीवन संघर्ष और पारिवारिक जीवन की व्यथा कितने उतार-चढ़ावों से भरी है, यह समझने और आत्मसात् करने के लिए एक तार्किक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

जनजातीय आबादी के दृष्टिकोण से विश्व में अफ्रीका के बाद भारत का स्थान दूसरे नम्बर पर आता है। जनजातीय समाज भी विशाल भारत का अभिन्न अंग है, जिसकी अपनी पृथक् पहचान है। अपनी उद्विकासीय यात्रा में जनजातियाँ आज भी स्वयं को विकास से जोड़ नहीं पाई हैं। कारण है, इनके समक्ष उत्पन्न नवीन चुनौतियाँ। जहाँ एक ओर ये अपनी मूल प्रकृति, परम्पराओं और मान्यताओं के बीच पिछड़े और शोषित समूह के रूप में जीवन गुजार रहे हैं, वहीं तेजी से इनके जीवन में घुसपैठ बनाती सभ्य समाज की संस्कृति ने इन्हें असमंजस की स्थिति में ला खड़ा कर दिया है। इन्हें कई प्रकार से संज्ञापित किया जाता है:- आदिम (Primitive), देशज (Indiginess), देशीजातियाँ (Aboriginals), मूलनिवासी (Native), भोला-भाला (Naive), जंगली (Savage), आरंभिक निवासी (Originals Rotlers), आदिवासी, असभ्य, बर्बर, वनजाति, वनवासी,

निष्कर्ष और सुझाव

आदिवासियों की पहचान वर्तमान समय में आम भारतीयों से हटकर है। इसका सबसे बड़ा कारण उनका अपने परम्परागत संस्कृति से लगाव व जुड़ाव है किन्तु शहरीकरण एवं औद्योगीकरण ने उनके जीवनयापन में काफी बदलाव ला दिया है। भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा देकर उन्हें एक विशेष नागरिक के रूप में समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। भारत के आदिवासियों को पिछड़ी और आदिम अवस्थाओं में रहने के कारण अपने विकास के लिए हमेशा से युद्धरत रहना पड़ा है और यह संघर्ष आज भी लगातार जारी है। अतः इस दिशा में कुछ सुझाव दिये जा सकते हैं–

- पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखण्ड, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र के आदिवासी इलाकों में भूमि अधिग्रहण के लिए भारत सरकार द्वारा बनाये गये कानून का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- भारत में अधिकतर राष्ट्रीय एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ आदिवासी बहुल क्षेत्रों में हैं क्योंकि वहाँ खनिज संपदा भरपूर मात्रा में पायी जाती है। भारत सरकार को इसके इस्तेमाल के बदले वहाँ के मूल निवासियों के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, रोजगार और स्वच्छ जल की व्यवस्था करनी चाहिए।
- उन्हें अपनी संस्कृति को संरक्षित रखने व गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत करने के अवसर उपलब्ध कराये जायें।
- जनजातियों के पलायन एवं अलगाव के कारण उनका जो संपर्क नक्सलवादियों से हो रहा है, उसे रोकने के उपाय करना आवश्यक है।
- जनजातियों के प्रति पुलिस-प्रशासन में मानवीयता और परिपक्वता जागृत करनी चाहिए।
- राजनीति में जनजाति समाज की भागीदारी को पूर्ण रूप से सुनिश्चित किया जाये।
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बने विभिन्न प्रावधानों के द्वारा जनजाति समाज के हितों की रक्षा की जाये।
- जनजातीय क्षेत्रों में काम करने वाले प्रशासक और समाज सेवक जनजातियों की समस्याओं को उनके विशाल धरातल पर रखकर देखें तथा आधुनिक शक्तियों के दबाव को ध्यान में रख समस्या का समाधान करें।
- विभिन्न जनजातीय समूहों द्वारा रखी गई माँगों को संविधान और जनजातियों को दी गई सुरक्षाओं के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिये।
- विकास के आयामों को जनजातियों पर बलात् थोपने के बजाय उनकी कला और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में विकास किया जाये। न ही उन्हें शासित किया जाये और न ही योजनाओं को उनके परिप्रेक्ष्य से हटाकर क्रियान्वित किया जाये।

संदर्भ

क्रोबर, ए.एल. (1994), ''कान्फ्रीग्रेशन ऑफ कलचर ग्रोथ'', यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस, बरक्ले एण्ड लोस एन्जिल।

सुसना, बी.सी. डेवाले (1992), डिस्कोर्सजे ऑफ एथ्निसीटी, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

सुरजीत, सिन्हा (1982), ट्राईब्स एण्ड इण्डियन सीविलाइजेशन स्ट्रक्चर एण्ड ट्रासफोर्मेशन।

सिंह, के.एस. (1997), पिप्यल ऑफ इण्डियन सिड्यूल ट्राईब्स नेशनल सीरीज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

मजूमदार, डी.एन. (1950), द अफेयरस् ऑफ द ट्राईब, ए स्टडी इन ट्राईब्ल डायनामिक्स, यूनिवर्सल पब्लिकेशन, लखनऊ।

फोकाल्ट, एम. (1961), मैडनेस एण्ड सीविलाइजेशन।

बॉस, एन.के. (1975), द स्ट्रक्चर ऑफ हिन्दू सोसाइटी।

शर्मा, ब्रह्म देव (1999), ट्राईब्ल डवलपमेंट।

पाठक, अरुण कुमार (2005), ह्यूमन राईट्स, सिलवर लाईन पब्लिकेशनस्, फरीदाबाद।

डोसी, एस.एल. एण्ड पी.सी. जैन (2001), सोशल एन्थ्रोपॉलोजी, रावत पब्लिकेशनस्, जयपुर।

एलविन, वैरीयर (1969), लोस ऑफ द नॉर्वे: ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द रिजल्ट ऑफ कोन्टक्ट ऑफ पीयूप्लस इन द अबोरिजनल एरियाज ऑफ बस्तर स्टेज एण्ड सेन्ट्रल प्रोविनसेज इन इण्डिया, वाग्ले प्रेस, मुबम्ई।

हर्जफील्ड, माइकल (2004), एन्थ्रोपॉलोजी, रावत पब्लिकेशनस्, जयपुर।

मलीनोवस्की, बी. (1940), मैजिक, साईंस, रिलीजन एण्ड अदर एसेज, ग्लनको।

वर्मा, उमेश कुमार (2012), ट्राईब्ल सोसइटी इन इण्डिया, इनसटीट्यूशन फॉर सोशल डवलपमेंट एण्ड रिसर्च, राँची।

इस पुस्तक में प्रकाशित आलेखों की मौलिकता, रीति-नीति एवं विचारों से संपादक अथवा प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। आलेखों में प्रयुक्त किये गये तथ्यों एवं विचारों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी हैं।

प्रकाशक
आदि पब्लिकेशन्स
एफ-11, एस.एस. टॉवर, धामाणी स्ट्रीट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302 003
फोन: 0141-2311900, 9414443132
ई-मेल: aadipublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2020

कॉपीराइट : संपादक

आई.एस.बी.एन. : 978-93-87799-32-5

मूल्य : ₹ 1295

साज-सज्जा
विक्रम कुमार शर्मा, जयपुर

मुद्रक
ट्राइडेंट एन्टरप्राइसेज, नोएडा

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकारों का संवाद विमर्श का मुख्य केन्द्र है। मानवाधिकार नैतिकता व न्याय के माध्यम से मानव द्वारा प्राप्त मूलभूत आवश्यकताओं के साथ सामाजिक पर्यावरण में मानव के सर्वांगीण विकास के लिए अवश्यक हैं। मानव अधिकारों की प्रकृति सार्वभौमिक हैं, परन्तु वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विकसित और विकासशील देशों में इसके दोहरे मापदण्डों ने समस्या को अधिक गम्भीर बनाया हैं। विकसित देश मानव अधिकार के पहलुओं के क्रियान्वयन के लिए विकासशील देशों से इनकी पालना की उम्मीद करते है, जबकि कई बार विकसित देश स्वयं इनका पालन नहीं करते। इसी कारण वैश्विक स्तर पर विभिन्न आयोगों, समितियों, परिषदों एवं गैर सरकारी अभिकरणों द्वारा मानव अधिकारों के संवर्द्धन, संरक्षण एवं क्रियान्वयन के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। जिससे सभी को समान अवसर एवं समानता का दर्जा प्राप्त हो।

प्रस्तुत पुस्तक में मानवाधिकार की संकल्पना, प्रकृति, संवैधानिक प्रावधान, भारत में इनकी प्रासंगिकता की विवेचना की गई हैं। साथ ही पुस्तक में महिलाएँ, दलित, अनुसूचित जनजाति, राष्ट्रवाद, पुलिस कर्मियों, शिक्षा के संदर्भ में मानव अधिकारों की भूमिका तथा उसके प्रभावों के विशलेषण एवं आंकलन का प्रयास किया गया है।

इस सभी दृष्टिकोण से यह पुस्तक सामाजिक-मानविकी विज्ञान में रूचि रखने वाले सभी वर्ग के जिज्ञासुओं व विद्वानों तथा शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

आशुतोष व्यास सह आचार्य प्राध्यापक के पद पर समाजशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, चितौड़गढ़ (राज.) में कार्यरत हैं। आप विगत 25 वर्षों से कॉलेज शिक्षा विभाग में अध्यापन एवं शोध कार्य में संलग्न हैं।

आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं— जनजातीय समाज और प्राथमिक शिक्षा (1), एन्वायरमेण्ट ससटेनेबिलिटी एण्ड सोशल चेन्ज (2), जेण्डर समानता और महिला सशक्तीकरण (3), इथनिसिटी एण्ड जेण्डर इक्वलिटि (4), रिसेण्ट ट्रेण्ड इन ग्लोबलाइजेशन, टूरिज्म एण्ड एन्वायरमेण्ट (5), जेण्डर इश्यूज एण्ड वुमैन इम्पावरमेण्ट (6), महिला सशक्तीकरण चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ (7), महानरेगा (8) तथा ह्युमेन राईटस इश्यूज एण्ड सोशल ट्राँसफारमेशन (9)। इसके अतिरिक्त आपके 25 से अधिक शोध एवम अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय रिजर्च जर्नल में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित दो शोध परियोजनाओं को पूर्ण किया है। आप 50 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में भाग ले चुके हैं। सन् 2018 में राजस्थान समाजशास्त्र परिषद द्वारा आपको ओ.पी. शर्मा अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया। आप कई परिषदों के सदस्य भी हैं, जिनमें भारतीय समाजशास्त्र परिषद्, राजस्थान समाजशास्त्र परिषद् एवं साऊथ एशियन जर्नल ऑफ टूरिज्म प्रमुख हैं। आप राजस्थान समाजशास्त्र परिषद् के पूर्व में सह-सचिव एवं सचिव पद पर रहे हैं। वर्तमान में राजस्थान समाजशास्त्र परिषद् के उपाध्यक्ष का कार्यभार भी देख रहे हैं।

आपका अध्यन व रुचि का क्षेत्र जनजातीय विकास, शिक्षा, जेण्डर व ग्रामीण विकास के अध्ययन जनांकिी सामाजिक परिवर्तन एवं पर्यावरण से सम्बन्धित हैं।

aadi
आदि पब्लिकेशन्स
एफ-11, एस.एस. टॉवर, धामाणी स्ट्रीट
चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 (राज.)
फोन: 0141-231 1900, 94144 43132
ई-मेल: aadipublications@gmail.com

ISBN: 978-93-87799-32-5
₹ 1295.00

Indian Agriculture Reforms and Rural Development

Dr. Gopal Ji Singh
Dr. Manas Behera
Dr. Sajoy P.B.
Dr. Pyare Lal

World Lab Publication
E-mail : worldlabpublication@gmail.com
www.worldlabpublication.com
TF-2 Sec-1, Vasundhara, Ghaziabad,
Uttar Pradesh 201012 Phone : 9810080056

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright holder.

© Editor : **Dr. Gopal Ji Singh, Dr. Manas Behera ,**

Dr. Sajoy P.B. & Dr. Pyare Lal

Publisher : World Lab Publication

Address : TF-2 Sec-1, Vasundhara,

Ghaziabad, Uttar Pradesh 201012

Phone : 9810080056, 9310388806

E-mail : worldlabpublication@gmail.com

Website : www.worldlabpublication.com

Edition : 2021

ISBN : 978-93-90734-26-9

Price : 500/-

Printed in : India

Contents

1. Economic Viability of Groundnut Cultivation for Crop Diversification in Punjab..... 1

Dr. Parminder Kaur & Parminder Kaur

2. Rural Women Entrepreneurship for Sustainable Development..... 23

Dr Sangeet Ranguwal & Dr Harsimranjeet Kaur Mavi

3. Agriculture and Livelihood of Rural People..... 42

Nishi Kant Niraj & Kumar Pushpam Abhishek

4. Indian Agriculture Policy Reforms and its Impacts on Agriculture..... 56

Dr Santhimol M.C & Anu Savio

5. A Study on Role of Technology in Agriculture Sector in India..... 66

Dr M.Sravani & Ms P.Gnaneswari

6. Nano fertilizers boon for Sustainable Agriculture Development: a Review..... 77

Dr. Sangita Devi Sharma

7. Organic Farming for Sustainable Agriculture..... 89

Rajneesh Thakur, Brijesh Kumar Singh & Kirti Kaundal

8. A Study on Future Prospects of Organic Farming in India..... 104

P. Gnaneswari & Dr. M. Sravani

9. Agriculture Marketing……..... 115

Madhu

10. Role of Information Technology in Agricultural Marketing..... 124

Priyadarsini Patnaik

11. Focus on Market Demand and Quality – Way Forward for Indian Agriculture: Case of Indian Cocoa……..… 148

Anju George & Dr. K V Raju

12. Problems of Indian Agriculture and Solution…….. 165

Sapana

13. Grants to the Agricultural Mechanization Scheme under the "Advanced Agriculture - Prosperous Farmers" Campaign……..…… 177

Mr. Pratap Baburao Shid & Dr. Salve Jagannath Motiram

14. Vegetable Cultivation in Punjab-Present Status and Future Prospects……..…….. 191

Rajkaranbir Singh

15. हरित क्रान्ति एवं ग्रामीण विकास..... 203

Soni Sangwan

Nano fertilizers boon for Sustainable Agriculture Development: a Review

Dr. Sangita Devi Sharma

Department of Botany,
Government Naveen College Bori, Durg (C.G.)

Abstract

In the present scenario use of nano fertilizers is boon for sustainable agricultural practices because it provide more surface area for different metabolic reactions in the plant which increases the rate of photosynthesis and produce more dry matter and yield of the crop and provide nutrients through the crop growth period and reduce use of chemical fertilizers and cultivation cost and environmental pollution. It increase crop growth up to optimum concentrations and further increase in concentration may inhibit the crop growth due to the toxicity of nutrient. It is also preventing plant from different biotic and a biotic stress. The word "Nano" means one-billionth. The size of a nano fertilizer is typically about 1 to 100 nanometers. They can be naturally occurring or engineered. Due to their extremely minute size, they have many unique properties that are now being explored for new opportunities in agriculture. There are naturally occurring nano fertilizers that have been previously proposed for agricultural use, such as zeolite minerals. However, engineered nano fertilizer can now be synthesized with a range of desired chemical and physical properties to meet various applications.

Keywords- Nano fertilizer, naturally occurring, engineered agricultural practices, minut size, environmental pollution.